HINDI

(Maximum Marks : 100)

(Time allowed : Three hours)

*(Candidates are allowed **additional 15 minutes** for **only** reading the paper. They must NOT start writing during this time.)*

---

*Answer questions **1, 2 and 3** in Section A and **four** other questions from Section **B** on at least **three** of the prescribed textbooks.*

The intended marks for questions or parts of questions are given in brackets [ ].

SECTION A

LANGUAGE - 50 Marks

1. Write a composition in approximately 400 words in Hindi on any ONE of the topics given below :— **[20]**

किसी **एक** विषय पर निबन्ध लिखें जो **400** शब्दों से कम न हो :—

(i) स्कूल के प्रधानाध्यापक का पद बहुत ही आदरणीय तथा जिम्मेदारी पूर्ण है। यदि वह पद आपको प्राप्त हो जाए, तो आप उस पद की जिम्मेदारियों को किस प्रकार पूरा करेंगे ? विस्तार से लिखें।

(ii) समाज में फैली बुराइयों को दूर करने के लिए कड़े कानून की नहीं, बल्कि नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है — विषय के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

(iii) पर्यटन एक बड़ा उद्योग बन गया है जिसके कारण सांस्कृतिक धरोहरें नष्ट हो रही हैं। इनके बचाव के लिए सुझाव दीजिए ताकि यह उद्योग फलता फूलता रहे। इस विषय के अन्तर्गत विस्तार से लिखें।

(iv) अनुशासित व्यक्ति सुखी और स्वस्थ जीवन जीता है। — विवेचन कीजिए।

(v) मनुष्य अनुभव से बहुत कुछ सीखता है। कभी-कभी अनुभव कड़वा भी हो जाता है। क्या आपको कभी कोई कड़वा अनुभव हुआ है ? उस अनुभव का वर्णन करते हुए लिखें, आपने उससे क्या सीखा ? उसका विस्तृत वर्णन करें।

(vi) निम्नलिखित में से किसी **एक** पर मौलिक कहानी लिखिए :

(a) मन के हारे हार है मन के जीते जीत।

(b) एक ऐसी मौलिक कहानी लिखिए जिसका अन्तिम वाक्य हो :

काश ! मैंने माँ की बात मानी होती।

This Paper consists of 5 printed pages and 1 blank page.

© *Copyright reserved.*

2. **Read the passage given below carefully and answer in Hindi the questions that follow, using your own words :—**

निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर, अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखिए :—

ज्ञान-प्राप्ति के अनन्तर महात्मा बुद्ध ने अपना उपदेश सारनाथ में दिया। उसमें उन्होंने कहा — "जीवन के दो मार्ग हैं। एक मार्ग पर चलकर लोग सुख-साधनों को जुटाते हैं और भोगों से लिपटे रहते हैं। यह जीवन को सुखी नहीं बनाता। दूसरा मार्ग त्याग का है, तपस्या का है। इस पर चलकर लोग शरीर को कठोर यातनाएं देकर भी अपने-आपको सुखी नहीं बना पाते। अत: ज्ञान-प्राप्ति के लिए, मानसिक सुख-शांति के लिए बीच का मार्ग ही श्रेयस्कर है। बुद्ध का यही सिद्धांत मध्यम-मार्ग के नाम से प्रसिद्ध है। कहते हैं कि महात्मा बुद्ध जहाँ बोदिवृक्ष के नीचे ध्यान-मग्न बैठे थे, उस मार्ग से एक भजन-मण्डली जा रही थी। गीत की स्वर-लहरी वातावरण को गुंजित कर रही थी। सहसा समाधिस्त बुद्ध के कानों में गायिका के गीत के मधुर स्वर गूंज उठे — 'वीणा के तारों को ढीला न छोड़ो, नहीं तो उससे मधुर स्वर नहीं निकलेगा और न ही उन्हें इतना कसो कि वे टूट ही जायें।' इन शब्दों से बुद्ध को मध्यम मार्ग की प्रेरणा मिली। उन्होंने अनुभव किया कि न तो भोगों से पूर्णतया तृप्ति हो सकती है और न ही भोगों को पूर्ण रूप से त्यागा जा सकता है। अत: जीवन के लिए भोग और त्याग के बीच का मार्ग ही श्रेयस्कर है।

महात्मा बुद्ध का चिंतन सरल और स्वाभाविक था। उनके मत में ऊँच-नीच का भेदभाव न था। राजा से लेकर रंक तक उनके लिए समान थे। उन्होंने धर्म के बाह्य आडम्बरों की अपेक्षा आन्तरिक शुद्धि पर बल दिया। यज्ञ में दी जाने वाली पशु-बलि का उन्होंने विरोध किया। जन-साधारण की भाषा में उन्होंने अहिंसा और प्रेम का जो उपदेश दिया उसने जादू का काम किया और देखते ही देखते लाखों नर-नारी उनके अनुयायी बन गये। 45 वर्षों तक उन्होंने घूम-घूम कर अपने अमृतमयी उपदेशों से जन-कल्याण किया।

महात्मा बुद्ध जीवन के 80 वर्ष पार कर चुके थे। शरीर दिन-प्रतिदिन क्षीण होता जा रहा था। अन्त में उन्होंने कुशीनगर की ओर प्रस्थान किया। कुशीनगर पहुंचते-पहुंचते उनका शरीर निढाल हो गया। उनके प्रिय शिष्य भिक्षु आनन्द ने शैय्या तैयार की। वह उस पर लेट गए। शिथिलता बढ़ती जा रही थी। निर्वाण की घड़ियाँ आ पहुंची थीं। यह देख आनन्द की आँखों से आँसू फूट पड़े। बोले — "देव ! अब हमारा मार्ग-दर्शन कौन करेगा ?" बुद्ध ने आँखें खोली। बोले — "आनन्द ! तुम्हारे सामने विशाल कर्म-क्षेत्र है। जरा, रोग और मृत्यु से त्रस्त मानवता को अंहिसा और प्रेम का मार्ग दिखाओ। क्यों भूलते हो संसार नश्वर है ? जन्म के बाद मृत्यु और मृत्यु के बाद जन्म प्रकृति का अटल नियम है। रही मार्ग-दर्शन की

बात। कौन किसका मार्ग-दर्शन करता है ? कौन किसका मार्ग-दर्शन कर सकता है ? "अप्प दीपो भव — अपना दीपक आप बनो।'' यह कहते हुए तथागत सदा के लिए समाधिस्थ हो गए। वातावरण शोक से भर गया। तथागत के निष्पंद पार्थिव शरीर के चारों ओर खड़े भिक्षु आँसू बहा रहे थे। रह-रह कर उनके कानों में तथागत के शब्द गूंज रहे थे "भिक्षुओं ! मुझ पर विश्वास मत करना। मैं जो कहता हूँ उस पर भी इसलिए विश्वास मत करना कि मैंने कहा है। सोचना, विचारना और अपने अनुभव की कसौटी पर जो खरा उतरे वही करना।''

प्रश्न :—

(i) मध्यम-मार्ग से आप क्या समझते हैं ? महात्मा बुद्ध को मध्यम-मार्ग की प्रेरणा कैसे मिली ? [4]

(ii) महात्मा बुद्ध के मत की क्या-क्या विशेषताएं थीं कि देखते ही देखते लाखों नर-नारी उनके अनुयायी बन गए ? [4]

(iii) महात्मा बुद्ध ने शोकाकुल भिक्षु को क्या उपदेश दिया ? इससे हमें क्या शिक्षा मिलती है ? [4]

(iv) महात्मा बुद्ध के निष्पंद पार्थिव शरीर के चारों ओर खड़े शोकाकुल भिक्षुओं के कानों में क्या शब्द गूंज रहे थे ? इन शब्दों से क्या प्रेरणा मिलती है ? [4]

(v) 'अप्प दीपो भव' का क्या अर्थ है ? ज्ञान-प्राप्ति के बाद महात्मा बुद्ध ने अपना उपदेश कहाँ दिया और उनका निर्वाण कहाँ हुआ ? [4]

3. (a) **Correct the following sentences and rewrite :—** [5]

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :—

(i) मैंने आज जाना है।

(ii) पुलिस को देखकर चोर आठ तीन ग्यारह हो गए।

(iii) सूर्यास्त के छिपते ही वातावरण में अंधेरा छा गया।

(iv) साहित्य और समाज का घोर संबंध है।

(v) यह कार्य तत्काल अभी पूर्ण करना है।

(b) **Use the following idioms in sentences of your own to illustrate their meaning :—** [5]

निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में प्रयोग करें :—

(i) गले का हार होना।

(ii) रंग चढ़ना।

(iii) सिर उठाना।

(iv) चाँदी होना।

(v) अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना।

SECTION B

PRESCRIBED TEXTBOOKS - 50 Marks

*Answer **four** questions from this Section on at least **three** of the prescribed textbooks.*

गद्य संकलन (Gadya Sanklan)

4. एक जगह गरम-गरम जलेबियाँ बन रही थीं। बच्चों के लिए थोड़ी-सी खरीद लीं। घर के दरवाजे पर पहुँचे। दरवाजा खुला था। घर के अन्दर पैर रखने में हृदय धड़कता था। न जाने बच्चे किस हालत में हों ?

(i) किसने और कब जलेबियाँ खरीदीं ? जलेबियाँ खरीदने वाले का बच्चों से क्या सम्बन्ध था ? **[1½]**

(ii) जलेबियाँ खरीदने वाला व्यक्ति कहाँ और क्यों गया था ? **[3]**

(iii) सीताराम जी की अनुपस्थिति में बच्चों की देखभाल किसे करनी पड़ती थी ? इस बारे में सीताराम जी क्यों चिंतित थे ? **[3]**

(iv) इस बार बच्चों की देखभाल किसने और क्यों की ? सीताराम जी का उससे कब और कैसे परिचय हुआ था ? **[5]**

5. "'मजबूरी' कहानी मातृत्व प्रेम से परिपूर्ण एक सरल वृद्धा की कहानी है।" इस कथन की पुष्टि कहानी की घटनाओं के आधार पर कीजिए। **[12½]**

6. संस्कृति की परिभाषा न देकर लेखक ने किन लक्षणों का उल्लेख कर संस्कृति को समझाने का प्रयत्न किया है ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। **[12½]**

काव्य मंजरी (Kavya Manjari)

7. जाऊँ कहाँ तजि चरण तुम्हारे।
काको नाम पतित पावन जग केहि अति दीन पियारे
कौने देव बराइ बिरद हित, हठि-हठि अधम उधारे।
खग, मृग, व्याध, पषान, विटप जड़, जवन-कवन सुत तारे।
देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज सब, माया-बिबस बिचारे।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु, कहा अपुनपौ हारै।

(i) प्रस्तुत पंक्तियाँ कहाँ से ली गई हैं ? इनके कवि कौन हैं ? भक्त ने किसके प्रति अपनी आस्था प्रकट की है ? **[1½]**

(ii) पतितपावन किसे कहा गया है और क्यों ? **[3]**

(iii) 'माया-बिबस बिचारे' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। **[3]**

(iv) "जाऊँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे" शीर्षक पद के आधार पर कवि की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए। **[5]**

8. साखी के आधार पर सिद्ध कीजिए कि कबीरदास जी एक सफल कवि एवं श्रेष्ठ उपदेशक थे, उन्होंने बाहरी आडम्बरों या पाखंडों का विरोध करके किस चीज पर अधिक ध्यान देने पर जोर दिया है ? [12½]

9. 'जैसा हम बोयेंगे वैसा ही पायेंगे।' पंक्ति को आधार बनाकर 'आ: धरती कितना देती है' कविता की समीक्षा कीजिए। [12½]

'सारा आकाश' (Saara Akash)

10. "बाबू जी तुम मुझे अपने हाथ से जहर देकर मार डालो
मेरा गला घोट दो ..... मुझे वहां मत भेजो .....।।" .

(i) इस कथन का वक्ता कौन है ? उसका परिचय दीजिए। [1½]

(ii) उसे कहां भेजा गया और क्यों ? समझाकर लिखिए। [3]

(iii) बेटी की दुर्दशा देखकर माता-पिता की क्या स्थिति थी ? [3]

(iv) उपन्यास के आधार पर तत्कालीन नारी की दशा का वर्णन कीजिए। [5]

11. समर का मन आत्म-ग्लानि से कब भर गया और क्यों ? समझाकर लिखिए। [12½]

12. 'सारा आकाश' उपन्यास के आधार पर नायिका प्रभा का चरित्र-चित्रण कीजिए। [12½]

'आषाढ़ का एक दिन' (Aashad Ka Ek Din)

13. "यह लोकनीति है मैं तो कहूँगा कि लोकनीति और मूर्खनीति दोनों का एक ही अर्थ है।"

(i) उपर्युक्त कथन कौन, किससे और कब कह रहा है ? [1½]

(ii) उपर्युक्त वाक्य किस सन्दर्भ में कहा गया है ? [3]

(iii) वक्ता का संक्षिप्त परिचय दीजिए। [3]

(iv) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक का उद्देश्य लिखिए। [5]

14. मल्लिका 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की एक महत्वपूर्ण पात्र है, जिसके चरित्र ने सर्वाधिक प्रभावित किया है। उसकी चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए। [12½]

15. मोहन राकेश द्वारा लिखित 'आषाढ़ का एक दिन' नाट्य लेखन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। नाटक के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए। [12½]